संगीत एवं मंच कला संकाय

भारत की सांस्कृतिक परम्परायें भारतीय कला, संगीत तथा नृत्य से बनी हैं। संगीत एवं मंचकला संकाय, का. हि. वि. वि. भारतीय संगीत कला तथा नृत्य कला की उन्नति तथा सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर है। पं. गोविन्द मालवीय तथा संस्थापक प्राचार्य संगीत मार्तण्ड पं. ओंकार नाथ ठाकुर के प्रयत्नों से वर्ष १९५० में संगीत एवं ललित कला महाविद्यालय की स्थापना हुई। यह १९६६ में गायन, वादन एवं संगीतशास्त्र विभाग के रूप में पल्लवित संगीत एवं मंच कला संकाय के रूप में परिणत हुआ। तत्पश्चात यह संकाय उत्तरोत्तर सफलतापूर्वक भारतीय शास्त्रीय संगीत कला (गायन एवं वादन) तथा नृत्य शैली में उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय पद्धतियों में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रहा है, साथ ही शास्त्र पक्ष को एक विशिष्ट अनुशासन के रूप में भी प्रतिष्ठित करने के लिए संकाय में संगीतशास्त्र विभाग भी प्रतिष्ठित है। देश में केवल इसी संकाय में सर्वप्रथम संगीतशास्त्र विभाग की स्थापना हुई थी। का. हि. वि. वि. एकमात्र केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जिसमे संगीत का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया।

संगीत एवं मंचकला संकाय के अन्तर्गत चार विभाग हैं। - गायन, वाद्य, संगीत शास्त्र तथा नृत्य विभाग। नृत्य विभाग की स्थापना सत्र २००७-०८ में हुई। भरत नाट्यम् तथा कथक में स्नातकोत्तर उपाधि के लिए सत्र २००७-०८ में नया पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। इस संकाय में निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। : पीएच. डी. , स्नातकोत्तर (एम. म्यूज) गायन, वादन, नृत्य, (एम. म्यूजिकोलॉजी) संगीतशास्त्र, स्नातक (बी. म्यूज) गायन, वादन, नृत्य तथा कनिष्ठ डिप्लोमा- गायन (हिन्दुस्तानी/कर्नाटक), वादन (सितार/वायलिन/बाँसुरी/तबला), संगीतशास्त्र में एक वर्षीय प्रमाण पत्रीय पाठ्यक्रम, नृत्य (कथक/भरतनाट्यम)। संकाय की विशिष्ट गतिविधियों में विद्यार्थियों तथा संगीत प्रेमियों के लाभार्थ गुरूवासरीय कार्यक्रम वर्ष भर चलते रहते हैं। संकाय द्वारा छात्रों एवं संकाय परिवार के लाभार्थ विभिन्न सुप्रसिद्ध कलाकारों के सोदाहरण व्याख्यान एवं मंच प्रस्तुतियां आयोजित की गयीं।